

परिक्षिप्तापरिच्छिन्नां ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ वासवीर्देवीं रासनीमिति पाठे शब्दवती ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ महेश्वरसंखुर्वरं ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ इति शल्यपर्वणिने
 हेमपट्टपरिक्षिप्तमुल्कांप्रज्वलितामिव ॥ शैक्यांव्यालीमिवात्युग्रां वज्रकल्पामयोमयी ॥ ५१ ॥ चंदनागुरुपंक्तां प्रमदामीप्सितामिव ॥ वसामेदोपदि
 ग्धांगीं जिह्वावैवस्वतीमिव ॥ ५२ ॥ पटुघंटाशतरवां वासवीमशनीमिव ॥ निर्मुक्ताशीविषाकारां पृक्तां गजमंदरपि ॥ ५३ ॥ त्रासनीं सर्वभूतानां स्वसैन्यपरिहर्षि
 णीं ॥ मनुष्यलोके विख्यातां गिरिशृंगविदारणीं ॥ ५४ ॥ ययाकैलासभवने महेश्वरसखंबली ॥ आह्वयामास युद्धाय भीमसेनो महाबलः ॥ ५५ ॥ ययामायामयान्
 दृसान् सुबहून् दालये ॥ जघान गुल्फकान् कुद्धो न दन्यार्थो महाबलः ॥ ५६ ॥ निवार्यमाणो बहुभिद्रौ पद्याः प्रियमास्थितः ॥ तां वज्रमणिरत्नौघकल्पां वज्र
 गौरवां ॥ ५७ ॥ समुद्यम्य महाबाहुः शल्यमभ्यपतद्रणे ॥ गदया युद्धकुशलस्तयादारुणनादया ॥ ५८ ॥ पोथयामास शल्यस्य चतुरोश्वात्महाजवान् ॥ ततः श
 ल्योरणे क्रुद्धः पीने वक्षसितो मरं ॥ ५९ ॥ निचखान नदन्वीरो वर्मभित्वा च सोभययात् ॥ दृकोदरस्त्वसंभ्रांतस्तमेवोद्धृत्य तोमरं ॥ ६० ॥ यंतारं मद्राजस्य निर्विभेद
 ततो हृदि ॥ सभिन्नवर्मरुधिरं वर्मन्वित्रस्तमानसः ॥ ६१ ॥ पपाताभिमुखो दीनो मद्राजस्त्वपाक्रमत् ॥ कृतप्रतिकृतं दृष्ट्वा शल्यो विस्मितमानसः ॥ ६२ ॥ गदा
 माश्रित्य धर्मात्मा प्रत्यमित्रमवैक्षत ॥ ततः सुमनसः पार्थ भीमसेनमपूजयन् ॥ ते दृष्ट्वा कर्मसंग्रामे घोरमक्लिष्टकर्मणः ॥ ६३ ॥ इति श्रीमहाभारतेशल्यपर्व
 णि भीमसेनशल्ययुद्धे एकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥ ॥ ६४ ॥ संजय उवाच पतितं प्रेक्ष्य यंतारं शल्यः सर्वायसी गदां ॥ आदाय तरसाराजं स्त
 स्थौ गिरिरिवाचलः ॥ १२ ॥ तं दीप्तमिव कालाग्निपाशहस्तमिवांतकं ॥ सभृंगमिव कैलासं सवज्रमिव वासवं ॥ २ ॥ सशूलमिव हर्यक्षं वने मत्तमिव द्विपं ॥ जवे
 नाभ्यपतद्भीमः प्रगृह्य महतीं गदां ॥ ३ ॥ ततः शंखप्रणादश्च तूयाणां च सहस्रशः ॥ सिंहनादश्च संजज्ञे शूराणां हर्षवर्धनः ॥ ४ ॥ प्रेक्षंतः सर्वतस्तौ हियो धायो धम
 हाद्विपौ ॥ तावकाश्चापरे चैव साधुसाध्वित्यपूजयन् ॥ ५ ॥ नहि मद्राधिपादन्योरामादाय दुर्नंदनात् ॥ सोढुमुत्सहते वेगं भीमसेनस्य संयुगे ॥ ६ ॥ तथा मद्राधिप
 स्यापि गदावेगं महात्मनः ॥ सोढुमुत्सहते नान्यो यो धोयुधि दृकोदरात् ॥ ७ ॥ तौ दृष्ट्वा विनर्दतौ मंडलानि विचरतुः ॥ आवर्त्तितौ गदाहस्तौ मद्राजवृकोदरो ॥
 ॥ ८ ॥ मंडलावर्त्तमार्गेषु गदाविहरणेषु च ॥ निर्विशेषमभूद्युद्धंतयोः पुरुषसिंहयोः ॥ ९ ॥

लंकं दीपेभ्यो भारतभावादीपे एकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥